12.05 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED ABRUPT CLOSURE OF BANARAS HINDU UNIVERSITY

MR. SPEAKER: Now, Calling Attention. Shri Madhu Limaye—absent; Shri Jagannathrao Joshi.

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : अध्यक्ष महोदय, इस पर दो घंटे का डिस्कशन एलाउ करने की कृपा करें, जिस में से सभी मैम्बरों को बोलने का मौका मिल जाएगा। बी० एच०यू० पर काल-एटेन्शन न रख कर डिस्कशन एलाउ करें, मैं समझता हूं सभी लोग इस से सहमत होंगे।

श्री नरसिंह नारायण पाण्डे (गोरखपुर) यह बहुत गम्भीर सवाल है—इस पर दो घंटे का डिस्कशन एलाउ करें . . (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय . आगे के लिए जब आप किसी स्पीकर का चुनाव करें तो देखा करें कि उसके कितने कान लगे हुए हैं 10—12 कान होने चाहिए। आप ऐसी बात कर रहे हैं, किसी की बात सुनी नहीं जा रही है। एक वक्त में तो दो आदमियों को तो सुनना कभी कभी मुश्किल हो जाता है, लेकिन 10-12 को कैसे सुना जा सकता है। इस काल एटेन्शन के अलावा न मेरे पास कोई मोशन है, न आपने कुछ लिखकर दिया है, यूंही खड़े होकर बोल रहे हैं। श्री जगन्नाथ राव जोशी।

श्री जगन्नाथ राव जोशी (शाजापुर) अध्यक्ष महोदय मैं अविलम्बनीय लोक-महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और अनुरोध करता हूं कि मंत्री महोदय इस पर अपना वक्तव्य दें—"बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के अचानक बन्द किए जाने के समाचार।"

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): According to information received from the Government of Uttar Pradesh and authorities of the Banaras Hindu University on the morning of March 13, 1975 the Vice-Chancellor administered the oath of office to the newly elected office bearers of the Students Union of Banaras Hindu University. Immediately after the office bearers had taken the oath, Shri Bharat Singh, General Secretary of the Union delivered a speech declaring that he will not allow the Vice-Chancellor's 'goondaism' and that he will take revenge against the Vice-Chancellor for all he has done during the last five years. He further said that from now onwards, even a leaf will not flutter in the University without his permission. He also threatened the Vice-Chancellor to leave the University immediately. The Vice-Chancellor passed in the afternoon of the same day orders expelling Shri Bharat Singh from the University for serious breach of discipline and gross misconduct

At about midnight, a mob of students, led by Shri Bharat Singh, broke into the Vice-Chancellor's Lodge demanding cancellation of expulsion orders and indulge in acts of brick-batting vandalism, hooliganism and looting. Sensing that there was imminent danger to the life of the Vice-Chancellor and threat of further damage to University property, the Police was called in the University and on its arrival the mob dispersed The Vice-Chancellor ordered the closure of the University *sine die* and also asked students to vacate hostels.

There has been no disturbance on the campus since the closure of the University. Police has been posted in the campus for protection.

This Hon'ble House will appreciate that academic life cannot go on in an atmosphere of violence and intimidation. Government is anxious that the sanctity of the University should be maintained. Acts of violence, threats, intimidation and abuses, particularly towards teachers can have no place in temples of learning, for such acts go against the

[Shri D. P. Yadav]

best-traditions of our culture. I would like to recall the objectives of the establishment of this great institution as enunciated by its founder, Pt. Madan Mohan Malaviya. One of the main objectives of the University was "to promote the building up of character in youth .

Through this House, therefore, I should like to appeal to all sections of the society to use their influence in restoring conditions where the great objectives on which the University is based may be pursued.

श्री जगन्नाथ राव जोशी : अध्यक्ष जी शुरु में ही मैं एक बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि चाहे वह विश्व विद्यालय का क्षेत्र हो या राजनीतिक क्षेत्र हो, कहीं भी तनाव, हिंसा, इस को हम स्वीकार नहीं करते हैं बर्दाश्त नहीं करते हैं। किन्तु यह जो वक्तव्य मंत्री महोदय ने सभा पटल पर रखा है यह एक तरफा है और अधूरा है। क्यों कि यह तो विश्वविद्यालय बन्द होने का समाचार है, यह कोई पहली घटना नही है। आज के वाइस-चांसलर डा० श्रीमाली, के कार्य काल में पिछले 6 साल में पांचवी वार यह विश्वविद्यालय बन्द हुआ है, और वह भी अनिश्चित काल के लिये। इस सदन में कई बार विश्वविद्यालय की घटनाओं को लेकर गरमा गरम चर्चा हुई है और कई बातें सामने रखी गईं, मांग की गई। किन्तु दुर्भाग्य है कि सरकार जो खुद आश्वासन देती है उसी पर वह कुछ काम नही करती है। जब पुराना कानून बदल कर 1969 में नया कानून बना उस समय के शिक्षा मंत्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने सदन में आश्वासन दिया था, मैं उस को उद्धृत करना चाहता हूं :

"I would like to give an assurance to my hon. friend that I do not like to keep this Bill on the statute book for a day longer than is absolutely necessary. I do not like nominated Executive Councils. I do not like nominated Courts. I have functioned all my life in a university and, as a university man, I would be the last person in the world to ask for nominated bodies for the governance of the university."

किन्तु इतना होने के बाद भी अभी तक वही पुराना सिलसिला चालू है और एक व्यक्ति के मनमाने आचरण के बारे में विद्यार्थी वर्ग के अन्दर काफी असंतोष है। जिस को गहराई में जा कर अध्ययन करना पड़ेगा।

मैं केवल एक ही बात मंत्री महोदय को याद दिलाना चाहता हूं कि पछिले साल विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और मंत्री चुने गये थे पूरे साल भर में एक भी कोई अप्रिय घटना हुई विश्वविद्यालय में ? एक भी नही हुई। किन्तु इस समय तनाव इसलिये पैदा हुआ कि अक्तूबर, 1974 में ही जिस छात्र परिषद् का सम्बन्ध कुछ हमारे मित्रों से था जो यहां पर बैठे हुए हैं, ऐसा लोग कहते हैं, उस छात्र सम्मेलन में स्वयं डा० श्रीमाली उपस्थित रहे और उन्होंने जयप्रकाश जी के आन्दोलन की भरसक आलोचना की, निन्दा की और उस को फासिस्टी आन्दोलन की संज्ञा दी जिस से विद्यार्थी वर्ग क्षुब्द था। इतना ही नहीं खुले रुप में जब वहा पर चुनाव हो रहा था तो कहते हैं कि उप-कुलपति महोदय ने इस के अंदर दिलचस्पी ली कि जयप्रकाश जी के आन्दोलन के समर्थक इस में चुन कर न आने पाये इस दृष्टि से जी जान से उन्हो ने कोशिश की किन्तु अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या मंत्री जयप्रकाशजी के आन्दोलन के समर्थक ही विद्यार्थी प्रतिनिधि चुन लिये गये। तब से यह तनाव पैदा हुआ है। जो सारा घटना क्रम है वह इस प्रकार है कि 13 तारीख को प्रात: काल साढ़े 9 बजे अध्यक्ष ने शपथ ग्रहण की, किन्तु शुरू में ही उप कुलपति महोदय ने इस दृष्टि से कि अध्यक्ष, श्री भरत सिंह शपथ ग्रहण न करे, कोर्ट से कुछ पाबन्दी आये, इस की उन्होंने कोशिश की। किन्तु उस में वह सफल नहीं हुए। यह मैं इसलिये कह रहा हू कि आप को मालूम हो जाय कि तनाव क्यों पैदा हुआ। इसलिये पीछे एक छात्र का हुड़दंग किया... (व्यवधान) इसलिए उन्हों ने उस समय क्या कहा, क्या नहीं

कहा इस के बारे में तो जांच होनी चाहिये वास्तव में कौन से शब्द निकाले इस का पता लगाना चाहिये । क्यों कि यह जो वक्तव्य है जो शिक्षा मंत्री ने दिया यह तो उप कुल पति ने जो दिया है वही है । किन्तु अखबार में कुछ और बात है । इतना ही नहीं, सब ने इस बात की मांग की है कि उस दिन क्या हुआ उस की पूरी जांच होनी चाहिये, क्योंकि उसी बात को लेकर उस का निष्कासन हुआ

मैं पूछना चाहता हूं कि दिल्ली में भी अब यहां के विद्यार्थी परिषद् के अध्यक्ष श्री श्रीराम मक्षा को निष्कासित किया गया था उसी को ले कर जब यहां चर्चा हुई थी तो मांग की गई थी कि शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग की चुनी हुई समन्वय समिति होगी और उस समिति के सामने यह बात रख कर उस में राय ले कर ऐसा निर्णय किया जाना चाहिये किन्तु जब सुबह साढ़े 9 बजे घटना होती है जिस के बारे में वक्तव्य उप कुलपति देते हैं उस के आधार पर किसी को निष्कासित करते हैं तो ऐसा लगता है कि वह चाहते थे कि विद्यार्थी वर्ग उत्तेजित हो । और उसी का हवाला देते हुए यह विश्वविद्यालय अनिश्चित काल के लिये बन्द किया जाय ताकि 16 तारीख को छात्र संघ का उद्घाटन लोकनायक, जयप्रकाश नरायण जी के कर कमलों से हो यह विद्यार्थियों की जो आकांक्षा थी उस पर पानी फिर जाय । इस के लिये यह सारा व्यूह रचा गया । इसलिये किसी को निष्कासित करने की जो घटना हो जाती है क्या यह बात पहले शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग की चुनी हुई समन्वय समिति के सामने रखी गई और उसकी राय ली गई? क्यों कि उस दिन शाम को घटना हुई उस का इतना विस्तृत विवरण जानबूझ कर किया है, जब कि प्रत्यक्ष अखबार वाले जो कहते हैं वह क्या है वह भी देखने लायक है । मैं उद्धृत करना चाहता हूं ।

"आज" अखबार कहता है कि "शुक्रवार के प्रातःकाल कई गमले टूटे हुए दिखाई पड़े । वाइस-चासलर के आवास की एक खिड़की का शीशा भी टूटा हुआ दिखाई पड़ा ।" पूरी घटना का वर्णन यह है । और जो वहां की चुनी हुई उपाध्यक्षा हैं, कु० अंजना देवी, उन का यह कहना है कि हर बार जब विश्वविद्यालय अनिश्चितकाल के लिए बन्द किया जाता है तो गमले टूट गये यही कारण दिया जाता है । इसलिए उन्होंने कहा है कि यह गमले की राजनीति क्या चीज है कुछ लोगों का कहना है कि यह स्वय जानबूझ कर यह किया गया है । मैं उद्धृत करना चाहता हू "सन्मार्ग" अखबार से जो काशी से ही निकलता है । "एसी स्थिति में यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि वातावरण को विक्षुब्ध कर, विश्वविद्यालय को अनिश्चित काल के लिए बन्द कर स्वय वाइस-चासलर ने यह परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि छात्र सघ का उद्घाटन ही न हो ।" जब काशी का अखबार यह लिखता है कि जानबूझ कर ऐसा सारा घटनाक्रम चलाया गया जिस से छात्रसंघ का उद्घाटन न कर ने के लिए जयप्रकाश नारायण जी न आने पायें । वहां एक भी घटना नही हुई, जब कि वक्तव्य में मत्री महोदय ने स्वीकार किया है कि विश्वविद्यालय न केवल अनिश्चितकाल के लिए बन्द हुआ, बल्कि विद्यार्थियो को हॉस्टल खाली करने के लिये भी कहा गया है

University was closed *sine die* and asked students to vacate hostels."

ताकि 16 तारीख को जयप्रकाश नारायण जी छात्र संघ का उद्घाटन करने आयें तो

[श्री जगन्नाथ राव जोशी

यहां कोई विद्यार्थी न रहने पाये। बसों का भी प्रबन्ध कर दिया गया है जो विद्यार्थियों को स्टेशन तक ले जा कर छोड़ आयें जिस से किसी न किसी तरह विश्वविद्यालय बन्द हो।

मैं ऐसा नहीं कहता कि विद्यार्थी गड़बड़ नहीं करते। आज कल कई विश्वविद्यालयों में जो स्थिति है उस को देख कर ऐसा लगता है कि विद्यार्थियों को जब अपना भविष्य अंधकारमय दिखाई देता है तो उन में निराशा बढ़ती है।

अन्त अन्त में मैं चाहूंगा कि मैं ने जो तीन बातें कही है उनके बारे में मन्त्री जी स्पष्ट जवाब दें।

(1) भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने जो आश्वासन दिया था उस की पूर्ति कब होगी ?

(2) निष्कासन करने के पहले विद्यार्थी और शिक्षक, इन के चुने हुए विद्यार्थीयों समन्वय समिति से राय ले कर क्यों नहीं उन का निष्कासित किया गया ?

(3) यह जो सारी घटनायें हुई हैं, कई अनियमितताय बरती गई, अपने अपने लोगों को लिया गया, खुले रूप में डा० श्रीमाली के बारे में वहां का विद्यार्थी वर्ग यह कहता है कि वह दलगत विचार रखते हैं और जब जब किसी को एडमीशन देना होता है तो उन्हीं दलों से सम्बधित लोगों को वहां पर प्रवेश दिया जाता है ?

जो नौकरियां दी जाती हैं उनमें पक्षपात से काम लिया जाता है ऐसी स्थिति में जो इस प्रकार की घटनायें हुई हैं तथा और भी जो-जो अनियमितताये बरती गई हैं. उन सब की पूरी जांच करने के लिए क्या एक समदीय समिति गठित करने का आप का विचार है ? मुझे तो विद्यार्थियों को तथा जयप्रकाशजी के आन्दोलन को बदनाम करने का ही यह तरीका लगता है। विश्व-विद्यालयों में इस तरह की घटनाओं का घटना ठीक नहीं है।

श्री डी० पी० यादव : बनारस विश्व-विद्यालयों को बन्द कर देना यह न जोशी जी को और न हो मुझे प्रिय मालूम देता है। यह पहलू तो जरूर इन्होंने यहां रखा है लेकिन दूसरे पहलू को इन्होंने छिपाया है। पिछले छ. साल के दौरान बनारस विश्वविद्यालय में किस किस प्रकार की घटनायें घटी हैं और उन घटनाओं के पीछे किन तत्वों का हाथ था इसको जानने के लिए जोशी जी को भी अपने कलेजे पर हाथ रख कर पूछना होगा। उनको यह भी देखना होगा कि किन किन कारणों से ये घटनायें घटा। क्या किसी विद्यार्थी की हत्या कर देना विद्यार्थी होने की निशानी है, विद्यार्थी होने का यह परिचायक है ? किसी आदमी को छुरा घोंप देना या वाइस चान्सलर को मार देने की धमकियां देते रहना, उनको डराने धमकाते रहना उचित है। ये सारी जो प्रवृत्तियां हैं मैं समझता हूं कि कोई विद्यार्थी जो पढ़ने लिखने में ज्यादा रुचि रखता है, इनमें नहीं फंसेगा, इनका आश्रय नहीं लेगा। बहुत से विद्यार्थी जो विद्यार्थियों के नाम पर किसी न किसी प्रकार यूनिवर्सिटी में घुस गए हैं ताकि अपना राजनीतिक मन्तव्य पूरा कर सकें, वैसे तत्व जो यहां आ गए हैं ऐसे तत्वों को मैं समझता हूं कि सारा सदन मन्त्रालय के साथ होगा और वाइस चान्सलर के साथ होगा निकाल बाहर करने में या इन अनरूली एलीमेंट्स को, गुंडा एलामेंट्स जो हैं उनका अच्छी तरह से दमन करने में, उनके साथ सख्ती के साथ पेश आने में

श्री जगन्नाथराव जोशी : मैंने एक साल का पूछा है। ये पिछले सारे सालों का बता रहे हैं।

श्री डी० पी० यादव : कचूरिया की हत्या कैसे हुई। उसका थोड़ा सा इतिहास जान लेने की भी आवश्यकता है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) : यह मामला अदालत में है।

श्री डी० पी० यादव : हत्या की गई यह भी सोचने की जरूरत है।

जहां तक डा० पी० के० आर० वी० राव की बात का और उनके द्वारा दिए गए आश्वासन का सम्बन्ध है और इसका सम्बन्ध है कि कोआर्डिनेशन कमेटी में बात आई या नहीं मैं कहना चाहता हूं कि वाइस चांसलर को पावर है कि वाइस चांसलर के साथ अगर किसी ने अभद्र व्यवहार किया है, ग्रास इंडिसिप्लिन किया है उसको तत्काल ससपेंड कर सके। लेकिन उसके बावजूद भी कोआर्डिनेशन कमेटी और ज्वायंट कंसलटेटिव कमेटी की बैठकों में यह कहा गया कि भगत सिंह ने जो कुछ भी कहा उसको ओथ दिला कर पूछा जाये और वहां ओथ दिलाने की बात थी। वाइस चासलर मान गए और उनको ओथ दिलाई गई। लेकिन ओथ के तुरन्त बाद वाइस चासलर के सामने उन्हें गन्दी गन्दी गालियां देना और अपशब्द कहना क्या यह विद्यार्थी होने का परिचायक है ?

श्री हेमेन्द्र सिंह बनेरा : (भीलवाडा) : आप मौजूद थे ?

श्री डी० पी० यादव : मै मौजूद था या नही लेकिन इसको सारी दुनिया जानती है। खुद आपके मित्र वहा मौजूद थे और उनसे आप कान्फिडेंशली पूछ ले।

जहां तक श्रीमाली जी का सवाल है कहा जाता है कि वह खास लीनिंग के आदमी है लेकिन जोशी जी का क्या किया आपने ? न जोशी रहेगा न माली, वाइस चांसलर का बगला रहेगा खाली तो कैसे काम चलेगा ? इस तरह के नारे जब लगाये जाते है तो इनका अर्थ आप समझ सकते है। जोशी जी भी खराब और श्रीमाली जी भी खराब, जब सब खराब हैं तो कौन वहां वाइस चांसलर बनने के लिए आएगा ? जोशी जी को वहां से भगाया गया। माली जी को भगाया जा रहा है। अब इसका फैसला तो आप लोगों को ही करना होगा कि वह वहां रहें या न रहें।

श्री जगन्नाथराव जोशी : मैंने संसदीय समिति द्वारा वहां जांच करने की बात भी कही थी।

श्री डी० पी० यादव : अभी ऐसा कोई विचार नही है।

SHRI B. V. NAIK (Kanara): Though we may have political differences, the sentiment expressed by Shri Jagannathrao Joshi that he condemns, like he did yesterday, the climate of violence in this country is most welcome. (*Interruptions*). We welcome him and the hon. member of the CPI(M) who is shouting to the path of peace. Now both the CPI(M) and the Jan Sangh have joined under the umbrella of Shri Jayaprakash Narayan.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Loknayak. You are only Naik.

SHRI B. V. NAIK: Loknayak.

MR SPEAKER: You are also a Nayak. He is also a Nayak.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: He is Balnaik. He is Loknayak.

SHRI B. V. NAIK: The point I was trying to make out was that the 6th March rally has shown that the hon. members themselves have contributed to the Gandhian ideology of peace and non-violence. It is in a way a compliment to JP who has converted the dacoits of Chambal Valley to peaceful livelihood Even Shri Noorul Huda of the CPI(M) contributes to the theory and practice of non-violence I really wonder whether the Jan Sangh—whose members and the hon. members seem to be so peaceful, orderly and disciplined in the House—has lost its grip on the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad. Are they listening to you or are they having their own autonomy and code of conduct of violence, its ethics and goondaism, particularly in the holy

[Shri B. V. Naik]

precincts of the University? This is a matter for their introspection.

As an ex-student of Banaras Hindu University, I shall narrate certain facts of the case. On 11 January 1975, the ABVP passed a resolution to the effect that they would gherao the teachers who had not agreed to the student movement and the *yuvashakti, janshakti* cult.

On 14th January, 1975, there was an attempt to burn the University Vice-Chancellor. He is an old man, nearly 80. On the date of the incident, according to the *Times of India*, there were 500 students; according to the *Hindustan Times*, there were 1,000 students who gheraoed him. I think the figure of the *Hindustan Times* is correct. His house has been ransacked. Everybody will agree that it goes to his credit that the Vice-Chancellor, who is such an old man, dares to stay within the premises of a closed campus university and does not stir out of the University in spite of the fact that he is surrounded by hostile, violent students.

MR. SPEAKER: We have decided in this House that a Member will get only five minutes.

SHRI B. V. NAIK: I have not seen him, I have seen only Pandit Govind Malaviya and Dr. Radhakrishnan, ex-Vice-Chancellors.

I would like to know whether the Chief Minister of U P. had told the Vice-Chancellor of U.P. that they should manage the university affairs properly, effectively and efficiently or else pull down the shutters of these temples of learning, and whether the present Vice-Chancellor has told some press correspondents that after Holi this University will be reopened.

Over and above that, what is the permanent solution to the youth unrest and the university unrest? I would like to know whether the hon. Minister has received a petition from numerous students of the Institute of Technology who have to work from morning till late in the evening, who do not have spare time or lazy hours to indulge in the hot politics of the campus, that they would like the continuation of the University because they have already appeared for a certain portion of their examination.

In any college or university, it is a small fraction of the student population, not even five per cent, which usually creates trouble. Ninetyfive per cent of them, like 95 per cent of us in this House, are silent, law-abiding, quiet people, and they are serious enough in regard to their studies How are you going to protect their interests? Are you going to buckle down under the pressure of this young man who got a name like that of the great Bhagat Singh? His placards are there all over the University Are you going to take certain strong steps so that the 95 per cent are not disturbed?

There is only one solution to this. I have tried it in my own constituency Tell them that you will hold a plebiscite to find out whether the University should run or not run. Let there be secret balloting, let there be voting, and you will find that 90 per cent are with the administration and will ask for the continuation of the University. Then why do you care for this five or 10 per cent? I would, therefore, urge you to give full support to the Vice-Chancellor and not buckle down.

Lastly, I would like to know what has happened to the 1969 Report of the Gajendragadkar Commission? I hope the hon. Minister has gone through it. I shall read out only one point, a most salient point, and I hope nobody feels hurt. The Gajendragadkar Commission has clearly stated that the R.S.S. Sakha—I have nothing against it in person, except as an academician—is operating within the University premises,

and they have been given two rooms. The report says:

"On principle, we are inclined to to take the view that on the university campus no outside organisation should be allowed to have a building of its own Considered from this point of view, it seems to us somewhat inappropriate that the RSS should be allowed to hold its *shakha* meetings on the campus of the university and use the building in relation to the said activities We wish that the university would soon take action in the matter so as to avoid any controversy in future "

That was in 1969 We are six years ahead What has been done about it? I would just conclude by reading a sentence from the first convocation address of the greater founder of this university, Malaviyaji

"It is my earnest hope—a hope which I know will be echoed by millions of my countrymen—that the Banaras University may not only be an object of special veneration and solicitude to the Hindus but may also attract by the quality of its secular education young of all religious persuasions in India The institution should be Indian first and Hindu afterwards "

I hope the minister would answer all my questions

श्री डी० पी० यादव : अध्यक्ष जी, प्रदेश के मुख्य मंत्री का यह दायित्व है कि राज्य में शासन की व्यवस्था और ला एंड आर्डर कैसे चले। औपचारिक और अनौपचारिक बातों में उन्होंने वाइस चांसलर से क्या कहा है मुझे पता नहीं है। लेकिन ला एंड आर्डर का जहां तक सवाल है उसके मेंटेनेन्स के लिये मुख्य मंत्री ने वहां के वाइस चांसलर को यह आश्वासन दिया है कि जिस प्रकार की सहायता की आवश्यकता होगी उसी प्रकार की सहायता उनको दी जायेगी।

जहां तक यह सवाल है कि होली के बाद कालेज खुल जायेगा, मैं समझता हूं कि पोजीशन नार्मलाइज हो जानी चाहिए और जल्दी से जल्दी इस विद्यालय का खोल दिया जायेगा। जहां तक सपोर्ट टू दी वाइस चांसलर की बात है उस बारे में मैं पुन यह बात दोहराना चाहता हू कि वहां की व्यवस्था को बनाये रखने के लिए उप-कुलपति महोदय को केन्द्रीय सरकार का पूरा सपोर्ट रहेगा।

आर० एस० एस० की बिल्डिंग के सबंध में इस सदन में कई बार हम जवाब दे चुके हैं कि यह केस न्यायालय मे है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी अध्यक्ष महोदय, देश के विभिन्न भागो में विश्वविद्यालय, छात्र असतोष के केन्द्र बने हुये हैं। केवल एक विद्यार्थी सगठन को दोष देकर यह सदन अपने दायित्व से मुक्त नही हो सकता।

अभी कलकत्ते मे रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय मे जो कुछ हुआ, क्या उसकी जानकारी हमारे कांग्रेस के मित्रो को नहीं है? क्या छात्र सघर्ष मे पश्चिम बगाल मे जो रक्तरंजित लड़ाई चल रही है, जिसमे गोलियों का आदान प्रदान हुआ है, सड़को पर सघर्ष लाया गया है, क्या उसकी ओर से आखें मूद कर चला जा सकता है?

रवीन्द्र भारती की वाइस चासलर एक महिला है डा० रमा चौधरी। उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया है,, उन्हें धक्के दिये गये छात्र कांग्रेस द्वारा।

अध्यक्ष महोदय, इसलिये मेरा निवेदन है कि मामले का अगर इस तरह का दलगत रूप देंगे और इस प्रश्न को आरोप-प्रत्यारोप का मामाला बनायेंगे तो समस्या के समाधान का रास्ता नही निकलेगा। क्या एक विश्वविद्यालय के एक जनरल सैक्रेटरी को निष्कासित कर देने से विश्वविद्यालय में शांति

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

हो जायेगी ? अगर निष्कासन से हिन्दू विश्वविद्यालय की समस्यायें हल होती, तो इस बार समस्या पैदा ही नहीं होनी चाहिए थी।

श्री नरसिंह नारायण पाण्डे : हम आप की मदद चाहते है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप हमारी मदद कहा चाहते हैं ? आप केवल सी० पी० आई० की मदद चाहते है।

श्री नरसिंह नारायण पांडे : वहा शाखा बन्द कर दीजिये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप शाखा-मृग जैसी बाते कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री बी० आर० शुक्ल (बहराइच) : अध्यक्ष महोदय शाखामृग के मानी बन्दर के होते हैं। माननीय सदस्य ने श्री पांडे के लिए शाखा मृग कह दिया है। (व्यवधान) यह बात हंसी मे उड़ाई जा रही है। यह सस्कृत का शब्द है, इस लिए लोग इस को समझ नही पाये है। लेकिन यह एक आपत्तिजनक शब्द है। (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : श्री पांडे के खिलाफ कुछ भी कहने की मेरी मंशा नहीं थी। और अगर उन्हे कोई चोट लगी हो तो मैं उस पर माफी की मरहम रखना चाहता हू। (व्यवधान)

श्री नरसिंह नारायण पांडे : माननीय सदस्य मुझे जो चाहे कहें, लेकिन वहा पर आर० एस० एस० की शाखा का बन्द करना चाहिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पिछले छः वर्षों मे 250 से 300 विद्यार्थी हिन्दू विश्वविद्यालय में निष्कासित किये जा चुके हैं। क्या माननीय सदस्य इन सारे विद्यार्थियों को विद्यार्थी परिषद से संलग्न करना चाहते हैं ? इस बार तो यूनियन के चुनाव मे जो अध्यक्ष चुने गये हैं, वह विद्यार्थी परिषद से सम्बन्धित नही हैं। विद्यार्थी परिषद अध्यक्ष के चुनाव में हारी है। लेकिन यह ठीक है कि वाइस-चासलर जिन्हें विजयी देखना चाहते थे, उन्हे भी मुंह की खानी पड़ी है।

मै किसी उपकुलपति के विरुद्ध सरलता से कोई आरोप नही लगाना चाहता हू। लेकिन डा० श्रीमाली हिन्दू विश्वविद्यालय मे जो राजनीति खेल रहे हैं वह केवल विश्व-विद्यालय के विनाश की राजनीति नहीं है, बल्कि वह देश के विनाश की राजनीति है। अध्यापकों की नियुक्ति मे, विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने मे और निकले हुए विद्यार्थियो को वापिस लेने मे वाइस-चासलर केवल कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया से सबंधित लोगो और छात्रो को बढ़ावा दे रहा है और बाकी के सारे संगठनो और व्यक्तियों की उपेक्षा कर रहा है।

अध्यापको के पद पर 40 नियुक्तियां ऐसी की गई है और अगर शिक्षा मंत्रालय एक कमेटी बनाये तो हम अपने आरोप को साबित करने के लिए तैयार है कि योग्य व्यक्तियों की उपेक्षा कर के कम योग्यता वाले व्यक्ति केवल इस लिए विश्वविद्यालय मे भर्ती जा रहे है कि वे सी० पी० आई० से सबंधित हैं। क्या शिक्षा मंत्रालय किसी विश्वविद्यालय को किसी राजनैतिक दल का अड्डा बनने देगा ? आप राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ की इमारत पर आक्षेप कर रहे हैं।

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) : उस पर नहीं, केवल उस के काम पर।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : काम तो आप रोक नहीं सकते हैं। अगर काम किसी

और दिमागों में चलता है, तो आप उस को नहीं रोक सकते हैं। वह लड़ाई दिलों और दिमागों में लड़नी पड़ेगी। वह लड़ाई आप निष्कासन से नहीं जीत सकते है।

वक्तव्य में कहा गया है कि शपथ लेने के बाद श्री भरतसिंह ने वाइस-चांसलर के सम्मान के विरुद्ध भाषण दिया। मंत्री महोदय ने ठीक कहा है कि उन्होंने वहां से सम्पर्क किया है, और उस के आधार पर ब्यान दिया है। हम ने भी वहां से सम्पर्क किया है। हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थी यहां आए है और वे हम से मिले हैं। हम ने उन से पूछा कि क्या सचमुच में वाइस-चांसलर की गुंडागर्दी खत्म करने के बारे में श्री भरतसिंह ने। हां। विद्यार्थियों का कहना है कि जो कुछ कहा गया है, वह यह था कि कि अब हम विश्वविद्यालय में गुंडागर्दी नहीं चलने देंगे। वाइस-चांसलर की गुंडागर्दी का उल्लेख नहीं किया गया।

श्री नरसिंह नारायण पांडे 12 बजे रात को क्या हुआ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी दिन में जो कुछ हुआ उस से पैर फिसले, तो ये रात के 12 बजे पर पहुंच गए।

समाचारपत्रों में प्रकाशित खबरों के अनुसार शपथ-ग्रहण की सारी विधि रिकार्ड की गई थी। जो कुछ श्री भरतसिंह ने कहा, वह टेप में है, ऐसा मैं ने पत्रों में पढ़ा है। उस से पता लग सकता है कि विद्यार्थी जो कुछ कह रहे है, वह सही है, या वाइस-चांसलर जो कह रहे हैं, वह सही है। मुझे जो जानकारी मिली है, वह यह है कि वाइस-चांसलर की गुंडागर्दी के बारे में कोई बात नहीं कही गई। इतना जरूर कहा गया कि वाइस-चांसलर ने जो भी निष्कासन किए हैं, वे आदेश वापिस लिए जाने चाहिए। या छात्रों का चुना हुआ प्रतिनिधि यह बात नहीं कह सकता है? क्या विश्वविद्यालय में भाषण स्वतंत्रता नहीं होगी? उस स्वतंत्रता के प्रयोग एक मर्यादा के भीतर होना चाहिए, उससे हम सहमत हैं। लेकिन विद्यार्थियों को चुनाव के सम्बन्ध में वाइस-चांसलर से शिकायतें थीं।

वाइस-चांसलर पहले यह चाहते थे कि श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के समर्थन संगठन चुनाव में न जीतें। उन की इच्छा के विपरीत वे जीत गए, तो उन्होंने यह प्रयत्न किया कि यूनियन के अध्यक्ष पद के लिए जो विद्यार्थी निर्वाचित हुआ है, वह अपने पद का कार्यभार न सम्भालने पाये। इस के लिए उन्होंने अदालत के फैसलों का हवाला दिया। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हुए थे। छात्रों ने जिस विद्यार्थी को चुन कर भेज दिया, क्या वाइस-चांसलर उस को पद ग्रहण करने से रोकने का प्रयत्न करेगा? तनाव और बढ़ा।

फिर यूनियन ने यह फैसला किया कि यूनियन का उद्घाटन श्री जयप्रकाश नारायण करें। यह वाइस-चांसलर महोदय को पसन्द नहीं आया। श्री जयप्रकाश नारायण को विश्वविद्यालय में आमंत्रित करना एक अपराध बन गया है। 1942 की क्रांति के सेनानी को हिन्दू विश्वविद्यालय में बुलाना जुर्म हो गया है। और यह बात डा० श्रीमाली तय करेंगे? मैं उन की जात के खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहता हूं। वह हमारे सहयोगी रहे हैं। इस सदन में थे, तब भले रहते थे। पता नहीं, काशी में उन पर किस का असर हुआ है। पंडित जी क्षमा करें, मैं उन की तरफ इशारा नहीं कर रहा हूं।

श्री जयप्रकाश नारायण यूनियन का उदघाटन न कर पायें, इस तरह की पूरी कोशिश की गई। अगर छात्र यूनियन के प्रधान मंत्री ने शपथ ग्रहण के बाद कोई आपत्तिजनक बातें कह दीं, तो उन को कारण-बताओ नोटिस दिया जा सकता था, कोई

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

जांच कमेटी बिठाई जा सकती थी, उस से कहा जा सकता था। कि तुम ने जो कुछ कहा है, क्या उस के लिए तुम्हें खेद है। लेकिन ऐसा लगता है कि वाइस-चांसलर अपना दिमाग बना चुके थे। उस को निष्कासित कर दिया गया।

फिर कहा गया कि रात में वाइस-चांसलर के बंगले पर हमला हुआ है। क्या मंत्री महोदय इस हमले के प्रकरण की भी जांच के लिए तैयार हैं? वह कोई जांच नहीं करा रहे हैं। वाइस-चांसलर के एक-तरफा बयान के आधार पर इस सदन में बातें कही जा रही हैं। अगर छात्र पुलिस से मुठभेड़ करना चाहते हैं, तो विश्वविद्यालय में इतनी जल्दी शांति स्थापित न होती। श्री भरतसिंह का कहना है कि छात्र वाइस-चांसलर के बंगले पर प्रदर्शन करने के लिए गए थे। पुलिस के आने से पहले श्री भरतसिंह उन छात्रों को वापस लाये।

श्री भागवत झा आजाद : वे लोग कितने बजे प्रदर्शन करने गए थे?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या मंत्री महोदय के कथन पर आप को विश्वास नहीं है?

श्री भागवत झा आजाद : आप बतायें। 12 बजे रात प्रदर्शन के लिए कौन सा अवसर था?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : देश में जागरण पैदा हो गया है, यह उस का प्रतीक है।

सवाल यह है कि क्या प्रदर्शनकारी हिंसात्मक थे और क्या बंगले में सचमुच में कोई तोड़-फोड़ हुई। मंत्री महोदय इस बारे में ज्यादा ब्यौरा दें। कौन सी चीज लूट कर और किस को मार कर विद्यार्थी चले गए? क्या यह सच नहीं है कि पुलिस के आने से पहले विद्यार्थी वापिस चले गये थे? क्या यह सच नहीं है कि जिला अधिकारी कह रहे हैं कि विश्वविद्यालय में आज भी शांति है। इस का अर्थ यह है कि छात्र गड़बड़ करने पर आमादा नहीं थे और वे संघर्ष को नहीं बढ़ाना चाहते थे, नहीं तो छात्रावासों को खाली कराने पर भी बड़ा भारी संघर्ष हो सकता था।

श्री भागवत झा आजाद : सारे छात्र ऐसे नहीं हैं। केवल विद्यार्थी परिषद् की तरफ से गड़बड़ होती है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : माननीय सदस्य विद्यार्थी परिषद् की बात कह रहे हैं। कांग्रेस से संबंधित छात्र तो बिल्कुल ऐसे नहीं हैं, कलकत्ता के छात्र कांग्रेस के सदस्य तो बिल्कुल ऐसे नहीं हैं। वे तो केवल गोलियां चलाते हैं, और वह भी आपस में चलाते हैं!

मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सारे मामले की जांच के लिए शिक्षा मंत्रालय कोई विशेष कदम उठाएगा या वाइस-चांसलर से प्राप्त जानकारी के आधार पर एकतरफा निर्णय लेगा? अगर सारे छात्र पढ़ना चाहते हैं जैसा कि श्री बाल नायक कहते हैं तो फिर विश्वविद्यालय बंद करने की क्या जरूरत है? अगर श्री भरत सिंह का आचरण आपत्तिजनक था तो शेष छात्रों से उन को अलग करने की कोशिश क्यों नहीं की गई? अगर वह वाइस-चांसलर के विरुद्ध अपशब्द प्रयोग करने के दोषी हैं तो कोई भी छात्र उन का साथ नहीं देता। वाइस-चांसलर विश्वविद्यालय को खुला रखते और जो उपद्रव करने वाले छात्र हैं उन को अलग थलग कर देते। लेकिन विश्वविद्यालय बन्द करना, यह वाइस चांसलर की किस योग्यता का प्रमाण है।

श्री भागवत झा आज़ाद : देखते नहीं हैं यहां पांच आदमी पूरे हाउस को तंग कर देते हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मगर स्पीकर साहब हाउस बन्द कर के नहीं जाते ।

श्री भागवत झा आज़ाद : स्पीकर साहब बैठे रह जाते हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्पीकर साहब बैठे रह जायें लेकिन हाउस को बंद नहीं करते ।

अध्यक्ष महोदय · बेइज्जती करवा लेना हू बन्द नहीं करना हू ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : नहीं, अध्यक्ष महोदय बंद नहीं करते इस पर मैं आप से सहमत हू ।

लेकिन हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस-चासलर के पास सारे रोगों का एक ही राम-बाण इलाज है—विश्वविद्यालय बन्द छात्र अपने घर जायें और सदन मे खड़े हो कर शिक्षा मंत्री वाइस चासलर की पीठ थपथपाये और पंडित मदन मोहन मालवीय का नाम लें । पंडित मदन मोहन मालवीय के विश्वविद्यालय मे डा० कालू लाल श्रीमाली जैसा वाइस चांसलर मालवीय जी की स्मृति को कलंकित कर रहा है । वह जिस तरह का आचरण कर रहे हैं मैं ने कालूलाल श्रीमाली के कई रूप देखे हैं मैसूर मे जब वह वाइस-चांसलर बन कर गए तो इसी विद्यार्थी परिषद् के अधिवेशन का उन्होंने उदघाटन किया था और आज हवा के साथ बह रहे हैं, सी पी आई के समर्थक बन गए । रूस को यात्रा कर के आए हैं और इसकी राजनीति चला रहे हैं ।

हिन्दू विश्वविद्यालय में शांति स्थापित करने का एक ही तरीका है । विद्यार्थी तो बहुत बार निकाले गए हैं अब वाइस-चांसलर को हटाने का वक्त आ गया है । वाइस-चांसलर को हटा देना चाहिए । किसी ऐसे व्यक्ति को वाइस-चांसलर बनाना चाहिए जो विश्वविद्यालय खुला रख कर छात्रों के असंतोष से निपटने में सफ़ल हो सके । लेकिन अगर आप यहां खड़े हो कर वाइस-चांसलर की पीठ थपथपाएंगे तो वाइस-चांसलर गलत नीति अपनाने के लिए और भी प्रोत्साहित होंगे । स्थिति और भी बिगड़ेगी और हिन्दू विश्वविद्यालय सारे उत्तर प्रदेश के जनतांत्रिक आन्दोलन का केन्द्र बन जाएगा । अभी वक्त है । क्या शिक्षा मंत्री महोदय वाइस-चांसलर को सलाह देंगे कि जो निष्कासन आदेश दिया है उसको वापस लें विश्वविद्यालय खोलें और विश्वविद्यालय को चलाने के लिए जल्दी से जल्दी सदन मे कानून बनाया जाये । श्री जगन्नाथ राव जोशी के प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं दिया उन्होंने । निष्कासन उचित है वैध है यह प्रश्न नहीं है यह विश्व-विद्यालय नामजद समितियों के बल पर कब तक चलेगा ? संसद इस विश्वविद्यालय के बारे मे कानून क्यों न बनाये ? अलीगढ़ का कानून बन गया हिन्दू विश्वविद्यालय कानून मे क्यों वंचित रहे ? वाइस-चांसलर की मनमानी क्यों चले ? शिक्षा मंत्री आंख मूंद कर के वाइस-चांसलर का साथ क्यों दें ? ये प्रश्न है जो आज काशी और सारे देश के अंदर गूंज रहे है । शिक्षा मंत्री इन का उत्तर देने का कष्ट करें ।

श्री डी० पी० यादव अध्यक्ष महोदय 1974 मे जो उत्तर प्रदेश मे विधान सभा का चुनाव हुआ उस मे कुछ जगह मैं भी गया था और वहां मैं ने एक तस्वीर देखी—वाज-पेयी जी अपना हाथ उठाए हुए थे और नीचे लिखा हुआ था—उत्तर प्रदेश का शासन अटल जी के मजबूत हाथों में । वह शायद 44 हाथ आए या 46 हाथ आए

[श्री डी० पी० यादव]

मैं यह नहीं जानता । .(व्यवधान) .... तो वह दिन तो अब नहीं आ सका । ...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी इसलिए गड़बड़ हो रही है बनारस में ?

श्री डी० पी० यादव नहीं वाजपेयी जी, वह मजबूत हाथ जब आएगा तो बनारस हिन्दू यनिवर्सिटी को समेट लीजिएगा ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी तब तक गड़बड़ होती रहेगी ?

श्री डी० पी० यादव एक बात मैं जरूर कहना चाहूंगा ।

श्री राम रतन शर्मा यह क्या मजाक कर रहे हैं ? सवालों का जवाब दे रहे हैं या मजाक कर रहे हैं?

श्री डी० पी० यादव मजाक नहीं । एक बात जो उन्होंने उठाई थी उस का जवाब मैं ने दिया ।

14 तारीख को 11 बजे रात में 800–900–1000 छात्र एक जगह इकट्ठे हों, चार पांच छात्र वाइस-चांसलर से मिलने के लिए जायें, नीचे उन के खिलाफ भद्दे नारे लग रहे हों, उस समय किसी भी आदमी का किसी ऐसे फर्यूरियस माब के साथ बातचीत करना क्या सम्भव हो सकता है ? वाइस-चांसलर ने कहा कि अभी मेरी बातचीत आप से नहीं हो सकेगी, माब ऐसी है, गुस्से में है

श्री अटल बिहारी वाजपेयी विद्यार्थियों को माब कह रहे हैं ?

श्री डी० पी० यादव : वह हजार के करीब लोग थे । जब हजार आदमी गन्दी गन्दी गालियां दे रहे हैं..... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मान लिया कि वाइस-चांसलर ने एक विद्यार्थी के निष्कासन का आदेश वापस लेने से इनकार किया, इस का क्या अर्थ यह होता है कि उस के जवाब में उस के घर में घुस कर उस के किवाड़ तोड़ कर .. (व्यवधान) . घर में घुस कर किवाड़ तोड़ा, उसमें जो फर्निचर थे उन को डैमेज किया, टेलीफोन का तार काट दिया और पत्थर फेंके, कितना सारा समान बाहर था उस को तहस नहस कर दिया, इस स्थिति को अगर आप शांत स्थिति कहते हैं तो मेरी समझ में नहीं आता हैं कि वाइस-चांसलर उस में क्या करेगा ? जब टेलीफोन का तार कट गया तो किसी प्रकार से वाइस-चांसलर का नौकर बाहर गया और उस ने पुलिस का इन्फार्म किया . . .

एक माननीय सदस्य पुलिस तो उन के बगले पर रहती है ।

श्री डी० पी० यादव जी नहीं, पुलिस उनके कम्पाउंड के बाहर है । जब पुलिस आई और विद्यार्थियों ने समझा कि पुलिस ऐक्शन लेगी तब विद्यार्थी वहां से गए । इस स्थिति में मैं इतना ही वाजपेयी जी से निवेदन करूंगा कि वहां स्थिति अच्छी हो, इस के लिए आप भी अपने गुड आफिसेज इस्तेमाल कीजिए । विद्यार्थियों के साथ न तो हम खिलवाड़ करना चाहते हैं न आप कीजिए । लेकिन इस को राजनीति का सवाल न बनाया जाय । बस इतना ही मैं आप से निवेदन करूंगा ।

बाकी तथ्य क्या हैं उस के लिए एफ आई आर लाज किया हुआ है । पुलिस इन्वेस्टिगेशन कर रही है । इन्वेस्टिगेशन की रिपोर्ट आने के बाद उस पर कार्यवाही होगी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं ने पूछा था कि बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के लिए संसद् का कानून बनेगा, इसका

कोई उत्तर नहीं दिया। वाइस चांसलर किस तरह से नियुक्तियां कर रहे हैं क्या इस के बारे में शिक्षा मंत्रालय कोई जांच करेगा, इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

श्री डी०पी० यादव : नियुक्ति का जहां तक सवाल है आप ने जो एलीगेशन लगाए हैं कि नियुक्ति किसी आधार पर होती है, किसी सीलिंग पर होती है यह निराधार है।

जहां तक कानून बनाने का सवाल है सरकार उस पर विचार कर रही है। बहुत जल्दी ही वह सदन में आएगा।

13.00 hrs.

SHRI NOORUL HUDA (Cachar): At the very outset I would like to observe that whatever happens in the campus of Banaras Hindu University is not an isolated affair. Banaras Hindu University is one of the most famous and distinguished universities of the country and we take pride in it inside and outside The Government always talk about the autonomy of educational institutions, especially Universities But I would like to ask the hon Minister It is the duty of Vice-Chancellor, while inaugurating a conference of students in northern India, to declare on that platform that J. P. Narayan is a fascist, to ask the students over there to curb the activities of J. P. Narayan and to fight against the movement led by Shri J. P. Narayan? I would like to ask this point-blank question The hon. Minister may kindly answer this question It is the duty of the Vice-Chancellor to ask the students to fight against JP? What happened on BHU? On 13th, during the oath-taking ceremony,—it is alleged, the Minister also confirmed it over here,—the General Secretary of the Union used certain expressions against the honourable learned Vice Chancellor Dr. Shrimali. Is that a sufficient excuse to expel a student elected by thousands of students of BHU? It is well known that certain incidents followed on the night, 12 O'clock or 2 O'clock, after that expulsion and in respect of whatever happened, we definitely and fully condemn the violence and violent activities.

We are not fully posted with the full facts of the case. What we feel is that the expulsion order is most arbitrary and completely unwarranted. On the plea of using alleged abusive remarks this student leader Shri Singh, General Secretary of the Union cannot be expelled summarily like that. This is not just an isolated affair. We have seen instances like these in other universites too. In Kurukshetra university only 2 or 3 months back, in November first week, the student leader, president of that students' union, was expelled from this university, because he dared to held a demonstration outside the campus of this university. This is what happened Mr Dutta—I don't know his full name—was asked by some pressmen and others about these matters and he said that he had consulted the Chief Minister of Haryana, Shri Bansi Lal and he did everything in and out of the university only after consultation with the Chief Minister of Haryana.

And my second point is this Before we talk about the sanctity of the institution, and the great traditions of Pandit Madan Mohan Malaviya to promote the building up of character in youth, before talking about such big things, let the Vice Chancellors of different universities be advised by the Government and the powers-that-be to mind their own business, that means, to mind their own activities, to professional things inside the university and not to go outside the university and exhort students to join or not to join this or that political movement.

In Allahabad University also, the Students' Union President was arrested under MISA and he was expelled from the University. The other day when I was reading the debate on the President's Address, the hon.

[Shri Noorul Huda]

madam. Prime Minister expressed sorrow that even the students in our country are being arrested under MISA. But, these things are going on everyday, every month, every six months and even every year and all over the country, students' leaders are being arrested under MISA or under Preventive Detention Act and under D.I.R. and various other rules. How long will these things contiune? If the Government means anything serious and if it wants to maintain peace and tranquillity inside the University Campus, then they should come forwared with a definite policy.

We have seen that if the students are associated with the ruling party or with the other parties who are allied with the ruling party elected they dominate the students' unions. There is nothing wrong in that. But, when students belonging to Opposition parties or belonging to the parties supporting Shri Jayaprakash Narayan are elected, they are immediately blacklisted and they are immediately given the explusion orders and they are arrested under MISA.

My last point would be this. If the students and the leaders of the Students Unions can be treated like this as they are being treated in the Banaras Hindu University and Allahabad University and Kurukshetra University, the Government is coming forward to condemn certain organisations like the R.S.S. and all that. It is well-known that our party has absolutely no sympathies with the R.S.S. and other organisations. If they commit any act of violence, we completely condemn them. But, at the same time, we have seen in Calcuta only the other day in the Rabindra Bharati University (*Interruptions*) when the university authorities were discussing certain points, some factions belonging to the parties like the Congress Chhatra Parishad and other organisations came and attacked the persons at that meeting and there was a lot of confusion in which many teachers and students were seriously injured. Only about two months back, when there was a students' Union meeting inside Calcutta University Campus, the students belonging to Chhatra Parishad and other anti-social elements came and attacked them with sticks and other weapons; they assaulted many students including the girl students belonging to the Students' Federation. To-day all these things are going on everyday—day and night—and naturally, it is not the responsibility of one particular party. But, it is the responsibility of the ruling party mainly because all over the country it is the ruling party and the students organisations belonging to them which are responsible. Therefore, in this context, I would ask the hon. Minister for Education as to why the educationists like Dr. K. L. Shrimali who, after being exalted to the office of the Vice-Chancellor of the University and other educationists are allowed to use public platform to condemn those organisations which do not belong to the ruling party?

Secondly it has already been stated in this House some time back that the Chief Minister of Haryana has threatened the students that if they participate in any of the activities of the Opposition parties then they will not only be expelled from the University but also after the completion of their studies they would not be employed in any Government organisation. I would like to know whether the Minister had contacted Dr. Shrimali and obtained his version before making this statement in the House because this version of the Minister is completely bogus. It seems to have been prepared by an Inspector of Police and not an educationist. We do condemn if any violent activity has been committed. Would Government agree to institute an enquiry by prominent educationists who enjoy the confidence of all

sections of the people into these incidents to find out the truth and inform the House about it? We say punish those who are guilty even those who are in authority. I would also like to know whether it is true that the Vice-Chancellor of BHU has got more sympathetic corner for certain parties and associations who are close to the ruling party and he is going out of his way to employ those persons who are associated with a particular body or party?

श्री डी० पी० यादव : अध्यक्ष जी, माननीय हुडा ने जो कहा उस के बारे में मुझे यही कहना है कि कोई भी ऐक्शन और कोई भी मूवमेंट जिस में हिंसा की राजनीति है वह फासिस्ट राजनीतिक कहलायेगी। अपनी व्यक्तिगत कैपेसिटी में वाइस-चांसलर ने क्या बात कही है वह मैं नहीं जानता हूं। लेकिन कोई भी राजनीति जो हिंसा की राजनीति होगी वह फासिस्ट ही कहलायेगी और मैं भी कहूंगा।

जहां तक छात्रों का एम० आई० एस० ए० में बन्द होने का सवाल है तो जो छात्र का नाम लेते हैं और हॉस्टल में रिवाल्वर, पिस्तौल या बम रखते हैं ऐसे लड़कों को एम० आई० एस० ए० में अरेस्ट करना कोई पाप नहीं होगा। ऐसे लड़कों के खिलाफ शासन जरूर कड़ी कार्यवाही करेगा।

13.14 hrs.

STATEMENT RE SUICIDE BY AN EMPLOYEE OF THE INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

MR SPEAKER: Mr Shinde may make a statement.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND IRRIGATION (SHRI ANNASAHEB P SHINDE): Sir, as the statement is quite long, I request that I may be permitted to lay it on the Table of the House

MR SPEAKER. Yes.

SHRI ANNASAHEB P SHINDE: Sir, I beg to lay the statement on the Table of the House

STATEMENT

Miss K Jothi was born on 19th August, 1946 Consequent upon the sudden death of her father Shri N. N Krishnan Section Officer, Central Water and Power Commission, on 15th August, 1966, she was appointed as Technical Assistant on the Government Side of the Indian Council of Agricultural Research with effect from 8-11-1966 (AN) on compassionate grounds At the time of her appointment, she was studying in M Sc. final in Anthropology in the Delhi University and she was, therefore allowed to complete her course as a regular student Miss Jothi was declared quasi-permanent in the post of Technical Assistant with effect from 9-11-1969 and on 18-4-1970, she was promoted to the post of Senior Technical Assistant on the Research Side of the Council On the basis of the option exercised by her, she was taken over as a regular employee of the Indian Council of Agricultural Research (Research Side) with effect from 1-2-1972 and the case for confirmation in this post is being processed

2 At the time of her appointment in the Council, Miss Jothi was staying in quarter No 563 Sector IV, R K. Puram, which was allotted to her late father The Council subsequently took up the matter with the Directorate of Estates and she was allotted alternative accommodation on com-